ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

विवेक विचार विमर्श

-: संपादक मंडल :-
प्राचार्य डॉ.अनार साळुंके
प्रा.डॉ.विनोदकुमार वायचळ
प्रा.डॉ.प्रशांत चौधरी
प्रा.डॉ.अर्चना बनाळे
प्रा.डॉ.मिलिंद माने
प्रा.संजय जोशी

ISBN : 978-93-5240-089-8

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

2017

विलासराव वायचळ 'वेदार्य'/१०९
२१.स्वामी विवेकानंद के नारी के संबंध में विचार-प्रा.गजानन सर्वज्ञ/११४
२२.स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता : एक चर्चा-प्रा. डॉ. जयराम श्री. सूर्यवंशी/ ११७
२३.स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा का हिन्दी कविता पर प्रभाव-प्रा.डॉ.लीला कर्वा/ १२१
२४.स्वामी विवेकानंदजी के शिक्षा सम्बन्धी विचार-प्रा. डॉ. सौ. मंगला श्रीराम कठारे/१२५
२५.स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा के उद्देश्य-प्रा.डॉ.मुकुंद गायकवाड/१२९
२६.स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का समाजशास्त्र तथा इतिहास पर प्रभाव-डॉ. ओमप्रकाश ब. झंवर/१३२
२७.स्वामी विवेकानंद और तत्वज्ञान-डॉ. पल्लवी पाटील/१३८
२८.स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा संबंधी विचार-प्रा.प्रकाश खुळे/१४०
२९.स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का स्त्री-विमर्श पर प्रभाव-प्रा.डॉ.राम सदाशिव बडे/१४४
३०.'तोड़ो,कारा तोडो' उपन्यास में व्यक्त देशभक्ति एवं मानवता-प्रा.डॉ.रमेश संभाजी कुरे/ १४८
३१.निराला के काव्य पर स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रभाव-प्रा.खराडे आर.एम./१५५
३२.रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य पर स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रभाव -प्रा. संजय व्यंकटराव जोशी/१६२
३३.निराला की काव्य चेतना पर स्वामी विवेकानंद का दार्शनिक प्रभाव -प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण/१६७
३४.जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कन्दगुप्त' विवेकानंद जी के विचारों का अग्रदूत-डॉ. मीना जाधव/ १७६
३५.राष्ट्रीय विचारों के संवाहक स्वामी विवेकानंद-डॉ.सुभाष इंगळे/प्रा.अकुश गायकवाड/ १८०
३६.''सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताओं पर स्वामी विवेकानंद का प्रभाव''-प्रा.डॉ.सुचिता जगन्नाथ गायकवाड/१८३
३७.हिन्दी काव्य साहित्य में विवेकानंद के विचारों का प्रभाव-प्रा.डॉ.सुधीर ग.वाघ/१९०
३८.''स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा का 'निराला' की कविता पर प्रभाव''-प्रा.उज्वला गाडे/१९४
३९.स्वामी विवेकानंद एवं भारतीय दर्शन-प्रा. वैशाली शिवाजी श्रीमंडळे/२०१
४०.''स्वामी विवेकानंद जी के स्त्री शिक्षा - विषयक विचार'' -प्रा. खांडे विद्या बाबूराव/ २०७
४१.बालकवि बैरागी की 'माँ, बस यह वरदान चाहिए' कविता में विवेकानंद के विचारों का प्रभाव -प्रा. विजय अशोक गवळी/२१०

४३.स्वामी विवेकानंद जी की विचारधारा का शिक्षाशास्त्र पर प्रभाव -श्रीगणेश वसंतराव कदम/२१३
४४.स्वामी विवेकानंद के अनमोल विचार -श्री.मैंदाड चित्रांगद लक्ष्मण/२१८
४५.स्वामी विवेकानन्द जी की विचारधारा का भारतीय उपन्यास साहित्य पर प्रभाव (डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर लिखित उपन्यास 'विवेकानन्द' के विशेष सन्दर्भ में) - कु. पूजा नारायण ताम्बे/२२४
४६.स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा का भारतीय नाटक साहित्य पर प्रभाव (ज़फ़र संज़ीरी रचित 'सन्देशवाहक' नाटक के विशेष सन्दर्भ में)/ -कु. ज्योति शिवाजी शिन्दे/२२१
४७.महादेवी वर्मा रचित संस्मरण 'निराला भाई' में विवेकानंद के विचारों का प्रभाव -श्री. समीर महम्मद तांबोळी/२२७
४८.सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और स्वामी विवेकानंद के नारी समस्या संबंधी विचार - प्रा.मारोती यमुलवाड/२३०
४९.स्वामी विवेकानंदांचे शैक्षणिक विचार-प्रा.डॉ.सुहास पाठक/२३५
५०.स्वामी विवेकानंदाचे जीवनकार्य -प्रा.डॉ.राजेंद्र गोणारकर/२३९
५१.स्वामी विवेकानंदाचे राजकीय व सामाजिक विचार -प्रा.डॉ.सुहास पाठक/प्रा.डॉ.गणेश जोशी/२४४
५२.स्वामी विवेकानंद : थोर राष्ट्रपुरूष -प्रा.डॉ.सुहास पाठक/श्री.भास्कर भोसले/२४८
५३.स्वामी विवेकानंदाचे शैक्षणिक विचार -डॉ.सौ.सुलभा दिलिपराव देशमुख/ प्रा.उबाळे मोतीलाल सुखदेव /२५१
५४.स्वामी विवेकानंद यांचे स्त्रीविषयक विचार -डॉ. गुंडरे दादाराव/२५५
५५.स्वामी विवेकानंद यांचे युवकांविषयी विचार -प्रा.देविदास भानुदास नागरगोजे/२६०
५६.स्वामी विवेकानंदांचा मानवतावाद -प्रा.दिनकर सुदामराव रासवे/२६४
५७.स्वामी विवेकानंदाचे विचार, चरित्र आणि त्यांचे समकालीन चरित्रकार -प्रा.डॉ.कुलकर्णी जयश्री रमेश/२६८
५८.युवकांच्या चिरंतन स्फूर्तीचे ऊर्जा केंद्र : स्वामी विवेकानंद -प्रा. भालेराव जे.के./२७२
५९.स्वामी विवेकानंदाचे शिक्षण विषयक विचार -प्रा. अशोक रामचंद्र गोरे/२७५
६०.स्वामी विवेकानंदांचे शिक्षण विषयक विचार -डॉ. मेधा गोसावी/२७९
६१.स्वामी विवेकानंद यांचा धार्मिक राष्ट्रवाद -प्रा. डॉ. पदमाकर पिटले/२८३
६२.''स्वामी विवेकानंदाचे आर्थिक व सामाजिक विचार'' -प्रा.डॉ. प्रमोद बालाजीराव बेरळीकर/२८७
६३.' सत्यं शिवं सुंदरम् : एक अमृतानुभव! ' -डॉ प्रशांत गुणवंतराव चौधरी/२९१
६४.स्वामी विवेकानंदांच्या विचारांचा साद प्रतिसाद : 'जान्हवी' -डॉ. सुवर्णा गुंड-चव्हाण/ ३००
६५.स्वामी विवेकानंद यांचे राजकीय विचार -श्री.आघाव श्रीधर सीताराम/३०६
६६.स्वामी विवेकानंद यांचे शैक्षणिक विचार-प्रा.डॉ. सोपान माणिकराव

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कन्दगुप्त' विवेकानंद जी के विचारों का अग्रदूत

डॉ. मीना जाधव
हिंदी विभाग प्रमुख
जवाहर महाविद्यालय, अणदूर
भ्रमणध्वनि क्र. ९९६०२४२६६७

स्वामी विवेकानंद जी का जन्म सन १८६३ में एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ। श्वनाथ दत्त और भुवनेश्वरी के पुत्र और सत्-चिद्-आनंद स्वरूप श्री रामकृष्ण परमहंस प्रिय शिरू विवेकानंद जी का बाल्यकाल सुविद्य, सुसंस्कृत और परम्परायुक्त परिवार में ता। बचपन में वे बिरेश्वर उर्फ बिले के नाम से पुकारे जाते थे। तत्पश्चात नरेन्द्र उर्फ न के नाम से जाने गये। कहते है कि उनका रूप-रंग उनके दादाजी दुर्गाचरण पर गया ा, जो की मात्र पच्चीस वर्ष की उम्र में ही वितरागी हो गए थे। माँ भुवनेश्वरी भक्ति मार्गी ो और स्वयं विवेकानंद बुध्दिवादी थे। परिवार में अंग्रेजी, ऊर्दू, संस्कृत तीनों भाषाओं ा ज्ञान प्राप्त था। विवेकानंद जी ने पदवी अध्ययन के साथ ही गीता उपनिषद, धम्मपद ा भी पठन किया था। साथ ही हिंदू धर्म के अतिरिक्त इस्लाम और ईसाई धर्म का भी ध्ययन किया था। हिंदूओं के विविध पंथो के तत्वों का भी ज्ञान संपादित किया था।

विवेकानंद जी युवावस्था से ही भौतिक जगत को त्यागना चाहते थे। वे सत्य की ाज में थे और सौभाग्य वश उन्हे श्री रामकृष्ण परमहंस के समान अनुभवी और ज्ञानी क भावी जीवन के कंटक मार्ग पर प्रकाश के अजस्त्र स्त्रोत के रूप में प्राप्त हुए। यद्यपि हे गुरू का साथ केवल नौ वर्ष प्राप्त हुआ लेकिन उनका प्रभाव ऐसा था कि विचार महंस जी के और मुख विवेकानंद का प्रतीत होता था। विवेकानंद जी के व्यक्तित्व में नेक गुणोंका समुच्चय दिखायी देता है। वे एक योध्दा और राष्ट्रभक्त संन्यासी थे। हिंदू ि सुधारक और समाज सुधारक थे। उत्तम संगीत के ज्ञाता और मधुर गायक थे। वे क प्रेमी और साहित्य प्रेमी थे। तत्वज्ञान के गाढे अभ्यासक और भारतीय संस्कृति के ाता थे।

सितम्बर १८९३ में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित सर्वधर्म परिषद में अपने पांडित्य का प्रदर्शन करते हुए विश्वधर्म के उद्य की भावना को व्यक्त किया। भारत को विश्व गुरू के रूप में स्थापित कर भारतीय संस्.ति की विजय पताका फहराई। सन् १८९७ में उन्होंने राम.ष्ण संघ की स्थापना की। यह मिशन आज तक निस्पृह भाव से निरन्तर कार्यरत है। दि. ४ जुलाई १९०२ को विवेकानंद जी ने अपना पार्थिव देह त्याग दिया।

जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन् १८९६ में बनारस (काशी) के सुप्रसिध्द सुंघनी सा परिवार में हुआ। माहेश्वर कुल का यह परिवार केवल सधन ही नहीं था इस परिवार में ज्ञान की भी परंपरा थी। विद्या, विनय और भक्ति की संपन्नता भी थी। प्रसाद जी का शिक्षा-दिक्षा स्थानीय क्वींस कॉलेज में कक्षा छह तक हुई। उसके बाद का अध्ययन घर पर ही विद्वान शिक्षकों के मार्गदर्शन में हुआ। घर पर ही हिंदी, अंग्रेजी और संस्.त के परंपरप्राप्त विन्दानों से काव्य और साहित्य की ठोस और प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। घर पर होने वाली साहित्य सभाओं ओर विद्या व्यासंगी कला प्रेमी रचनाकारों के सहवास के प्रभाव स्वरूप किशोर अवस्था से ही उन्होंने लेखन आरंभ कर दिया। उनकी पहली रचना 'इंदू' नामक प्रसिध्द पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। साहित्य की सभी विधाओं में उन्होंने लेखन किया है। काव्य की नूतन शैली के वे एक सर्वश्रेष्ठ कवि थे। इसलिए उन्हें नूतन शैली का प्रजापती माना जाता है। भारतीय जीवन दर्शन और चिंतन की परम्परा में ही मानव का उज्वल भविष्य नीहित है, यह क्रांतदर्शी स्वप्न दृष्टा प्रसाद जी जानते थे। भारतीय संस्.ति के आलोक में ही उन्होंने साहित्य सृजन किया। प्रसाद जी मात्र अडतालिस वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हो गये।

जब प्रसादजी साहित्य सृजन में रत हुए तब तक विवेकानंद जी की वाणी का ओज भारत के साथ ही विश्व में भी प्रसार हो चुका था। अपने व्याख्यानों और राम.ष्ण मिशन के माध्यम से विवेकानंद जी ने भारतीयो में नवचेतना का संचार कर दिया था। विवेकानंद जी और प्रसादजी पर भारतीय दर्शन का और उसमें भी वेदान्त दर्शन का सर्वाधिक प्रभाव रहा है। निश्चित ही प्रसाद जी पर तत्कालीन युग पुरूष के रूप में विवेकानंद जी के विचारों का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। वैसे तो चन्द्रगुप्त नामक नाटक विवेकानंद जी के विचारों को प्रकट करने वाला प्रसादजी का एक उत्तम नाटक है। नायक चंद्रगुप्त विवेकानंद जी के विचारों का वाहक है। प्रसाद जी का नाटक 'स्कन्दगुप्त' सन् १९२८ में रचा गया। प्रसादजी भारत को पराधीनता की बोर्डयों से मुक्त करना चाहते। भारत में जिस नवजागरण की चेतना को स्वामी विवेकानंद ने प्रस्फुटित किया था, उसी चेतना को और अधिक जाज्वल्यमान करके प्रखर राष्ट्रवाद का प्रसार प्रसादजी ने अपने नाटक 'स्कन्दगुप्त' के माध्यम से किया। गुप्त काल २७५ई. से लेकर ५४०ई. तक का माना जाता है। यह वह समय था जब आर्य साम्राज्य जावा-सुमागातक फैला हुआ था। समस्त एशिया पर भारतीय संस्.ति का प्रभाव था। इसी गुप्त वंश का उज्वल नक्षत्र था 'स्कन्धगुप्त'। 'स्कन्दगुप्त' के सिंहासन पर बैठने

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

पूर्व ही साम्राज्य के भीतर ही अनेक षडयंत्रो की व्यूह रचना होने लगी थी। साम्राज्य ...क्रमणकारी हुणों से संघर्ष में उलझा हुआ था। हुणों ने अपनी महात्वाकांक्षा कों अंजाम ... के लिए साम्राज्य के भीतर के असंतुष्ट लोगों के साथ मिलकर स्कन्द और उसके ...हयोगियों को नष्ट करने की योजनाओं को क्रियारूप देना प्रारंभ कर दिया था।

मगध के सम्राट कुमारगुप्त की छोटी रानी और पुरगुप्त की माता अन्तदेवी स्कन्द ...स्थान पर पुरगुप्त को युवराज पद और साम्राज्य देना चाहती है। उनके षडयन्त्रों के कारण मगध शत्रुओं से घिरा पडा है और स्कन्द अपने अधिकारों के प्रति उदासीन है। प्रसाद ... ने तब पर्णदत्त के मुख से विवेकानंद का विचार ही प्रस्तुत किया है। पर्णदत्त स्कन्द कहते है कि अपने अधिकारों का प्रयोंग वे-छत्रस्त प्रजा की रक्षा के लिये आतंक से ...ति को आश्वासन देने के लियेफ करें। ठीक यही मत विवेकानंद जी ने अपने शिष्यों को ...त्र लिख कर दिया था। यह पत्र याकोहामा, जपान से अपने शिष्य अलसिंगा पेरूमाल को ...० जुलाई, १८९३ में लिखा था। जिसमें वे कहते है कि-समाज को नविन स्वरुप देनेवाले, ...खों को अन्न और सामान्य जनता को शिक्षा देने के लिए तत्पर और जिन्हे अपने ही पूर्वजो ... अत्याचार करके पशुतुल्य, जीवन जीने के लिए बाध्य किया ऐसे अपने ही बंधुओं को ...नःमनुष्य बनाने के लिए निस्वार्थ और सच्चे दिवाले कितने आज तुम दे सकत हो। क्योंकि ...ब तक उन्हे अपने कर्तव्यों का अहसास नहीं होगा वे देश हित के लिए कुछ भी नही कर ...एगें। पर्णदत्त स्कन्दगुप्त को उसके कर्तव्यों का ही स्मरण कराते है-उठो, जागो और अपने ...क्ष्य को प्राप्त करने तक मत रूकों।

मालव नरेश और मगध के मित्र बंधुवर्मा युवराज स्कन्द से सहायता की याचना करते ... कि यदि समय पर सहायता नहीं मिली तो वे मगध साम्राज्य के दुर्ग की रक्षा नहीं कर ...एगें। लेकिन पत्नी जयमाला और बहिन देवसेना की सहायता से वे हुणो को रोकने का ...यास करते है। स्वामी विवेकानंदजी की स्त्रियों के प्रति अपार श्रध्दा थी। अपनी माता और जगन्माता के प्रभाव स्वरूप और तत्कालीन समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले ...जा राम मोहन रॉय, आनंद मोहन बोस और सुरेन्द्रनाथ बॅनर्जी के कारण उनका दृष्टिकोण ...दार था। स्वामी राम.ष्णानंद को लिखे पत्र में वे कहते है कि जब तक स्त्रियों कीस्थिती ...ही अच्छी नही होगी तब तक जग का कल्याण नहीं हो सकता इसलिए वे स्त्रियोंके लिए ...ठ का निर्माण करते है ताकी गार्गी, मैत्रेयी से भी श्रेष्ठ स्त्रियों का भविष्यमें निर्माण हो सकें। ...सादजी ने जयमाला से कहलवाया है कि ङहम क्षत्राणी है, चिरसंगिनी खड्गलता का हम ...गो से चिरस्नेह है। स्कन्द अचानक वहा आकर जयमाला, विजया और देवसेना की रक्षा करता है।

'स्कन्द गुप्त' में त्याग का महत्व बतलाया गया है। स्वामी विवेकानंद अपने शिष्यों ...से यही कहते थे कि जीवन में सुख का त्याग किये बिना लक्ष्य को नहीं पाया जा सकता। सकन्दगुप्त भी यही कहता है। 'संसार में जो सबसे महान है, वह क्या है ? त्याग।' सुखों

का त्याग, साधनोंका त्याग यहाँतक की देशहित हेतु प्राणो का भी मोह त्याग। स्कन्द सदैव सशंय-ग्रस्त रहता है कि मानव जीवन का उद्देश्य कोई और निगूढ रहस्य है। अनेक षडयंत्रो, संकटो और इणों के आक्रमण को लौटाते हुए स्कन्दगुप्त स्वंय सारी सत्ता से अलिप्त ही रहता है।

स्वामी विवेकानंद ने शिकागों में भारत के जिस गौरवशाली परंपरा, दर्शन, अध्यात्म का वर्णन कर भारतीय सभ्यता और संस.ति के आकर्षण में हजारों अमिरीकी भाई-बहनों कों बांध लिया था उसी गौरवशाली भारतीय अतीत को प्रसाद जी ने 'स्कन्दगुप्त' मे मातृगुप्त के मुख से गीत रूप में प्रकट किया है। हिमालय के आंगन में...भारत वर्ष।

यह पूरा गीत ही विवेकानंद जी के विचारों का वाहक है। भारत को विश्वपटल पर चमकता सितारा बनाने वाले स्वामी विवेकानंद जी का कार्य मूलत: आध्यात्मिकथा उस समय भारतीय स्वतंगता के बारें में कोई विचार प्रवाहित नहीं था। क्योंकि, उस समय तक भारतीय मन अंग्रेजोंद्वारा फैलायी भ्रामक विचारधारा से ग्रसित था। उन्हें अपनी ही महान परंपरा, ज्ञान, दर्शन, विज्ञान का ज्ञान नहीं था। विवेकानंद जी ने अपने व्याख्यानों और पत्रों से अपने शिष्यों और अनुयायियों के मन में ऊर्जा भरी थी। उसी चेतना का, ऊर्जा का परिपाक जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों में हमें दिखायी देता है। स्कन्दगुप्त उसी की एक अगली कडी के रूप में है। 'स्कन्दगुप्त' नाटक विवेकानंद जी के विचारों का वाहक है।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad